

मुमितसागर जीमहाराज की दीक्षा तथा और भी कई दीक्षाएँ हुईं। लगभग ५०-६० चौके लगते थे चर्चा का दृश्य बड़ा ही अनुपम था। नमोस्तु नमोस्तु शब्दों से सारा शहर गुंजायमान हो जाता था। इस चातुर्मास कमेटी के मंत्री का भार भी आप को दिया गया आपने परिश्रम पूर्वक संघ की वैयावृत्ति की तथा व्यवस्था की जिससे चातुर्मास सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ।

चातुर्मास सम्पन्न होने के पश्चात् आचार्य महाराज ने पंच कल्याणक प्रतिष्ठा के लिए सेठ मूल चन्दजी का ध्यान आकर्षित किया जिसके फलस्वरूप पंच कल्याणक प्रतिष्ठा कराया जाना निश्चय हुआ।

पंच कल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव

सेठ साहेब के सानिध्य में पंच कल्याणक प्रतिष्ठा कमेटी का चुनाव हुआ जिसके मंत्री भी आप ही चुने गये। महोत्सव सं. २००८ वंशाल शुक्ल पंचमी से तयमी तक विशाल पैमाने पर हुआ।

आपने लगभग दस माह रात दिन अधिक परिश्रम कर महोत्सव में सफलता प्राप्त की ।

महोत्सव में लगभग ५० हजार जनताका एकत्रित होना तथा खंडेलवाल महासभा का अधिवेशन होने से उत्सव में चार घांट लग गये ।

वैसे तो महोत्सव में नल, बिजली, तार, टेलीफोन आदि की तो व्यवस्था थी ही किन्तु, महोत्सव के स्थान पर ही हर समय रेलवे टिकट मिलने से यात्रियों को बड़ी सुविधा रही अस्तु सभी ने इस व्यवस्था की बड़ी प्रशंसा की ।

जैन पंचायत

आप स्थानीय पंचायत का कार्य लगभग ४० वर्ष से मन्त्री पद पर रहकर धार्मिक एवम् सामाजिक सेवार्थ करते आ रहे हैं । किन्तु वृद्धावस्था तथा अस्वस्थता के कारण कुछ समय से आपको इस सेवा से मुक्त होना पड़ा ।

दूसरा अध्याय

यही अर्थ है कि जो मनुष्य अपने ईश्वर से दूर हो जाय, उसे ईश्वर का प्यार नहीं मिलेगा। ईश्वर का प्यार ही हमारे जीवन की नींव है। यदि हम ईश्वर से दूर हो जाय, तो हमारे जीवन में अशांति और दुःख फैल जाय। ईश्वर के प्यार को हमारे जीवन में लाने के लिए हमें ईश्वर से निकट होना चाहिए। ईश्वर का प्यार ही हमारे जीवन की नींव है।

यही अर्थ है कि जो मनुष्य अपने ईश्वर से दूर हो जाय

यही अर्थ है कि जो मनुष्य अपने ईश्वर से दूर हो जाय, उसे ईश्वर का प्यार नहीं मिलेगा। ईश्वर का प्यार ही हमारे जीवन की नींव है। यदि हम ईश्वर से दूर हो जाय, तो हमारे जीवन में अशांति और दुःख फैल जाय। ईश्वर के प्यार को हमारे जीवन में लाने के लिए हमें ईश्वर से निकट होना चाहिए। ईश्वर का प्यार ही हमारे जीवन की नींव है।

“ तत्त्वार्थसूत्र - कर्त्तरिम्-
उमास्वामि मुनीश्वरम् ।
श्रुतकेवलि -- देशीयं-
वन्देऽहं गुण - मन्दिरम् ॥”

- मैसूर नगरताल्लुक-
शिलालेख न० ४६

(निर्देश, परिभाषा, सूचना, संशोधन, विचार
और निष्कर्ष इसके द्वारा भी उद्घोषित होत हैं।
समाधान-प्रमाण-परिणाम का नाम होता है । (यह
तो अनुमान कहलावे ?)

मत्संख्याक्षेत्रं स्वर्गान् कालान्तरं भावात्प
वर्तुष्यञ्च ॥८॥

गन् (Quantity) संख्या, क्षेत्र, स्थान,
 घन, मात्रा (विस्तार) आदि और प्रमाणद्वारा
 (Quantity) मापके इन आठ समुहों में भी
 जीवादि वस्तुओं आदि का ज्ञान होता है ।

॥१॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥—

मतिश्रुतावाधिमनःपर्यवर्त्यनानि
ज्ञानम् ॥२॥

मनिज्ञान, भुनक्तान, अविज्ञान, मनः पर्यंत

[illegible]

$\frac{1}{2} \times \frac{1}{2} = \frac{1}{4}$

सत्यमेव जयते

1939

[illegible][illegible]

सतिः प्रयानिः प्रयानिः प्रयानिः ॥५॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

[illegible]

अथर्षिहायापचारणः ॥१५॥

ਸਮਿਤੀ ਦੇ ਜਵਾਬ (ਸਾਧਾਰਨ ਸ਼ਬਦਾਂ ਵਿੱਚ),

गुणित करने पर $(४८ \times ६ = २८८)$ मतिज्ञान के २८८ भेद होते हैं।

अर्थस्य ॥१७॥

ऊपर बड़े गये मतिज्ञान के भेद अर्थ के होते हैं। (विषय और स्फुट वस्तु को अर्थ यानों पदार्थ बताते हैं।)

मतिज्ञान के सम्बन्ध में और भी बताते हैं-

व्यञ्जनस्यावग्रहः ॥१८॥

व्यञ्जन पदार्थ (अर्थात् अव्यक्त अवग्रह रूप शब्दादि पदार्थों का) अवग्रह ज्ञान होता है। (ईहा आकाश, ओद पाश्वा रूप ज्ञान नहीं होते) यह अवग्रह भी १२ भेदों सहित चक्षु और मन को छोड़ केच चार इन्द्रियों से ही होता है इस प्रकार व्यञ्जन अवग्रह मतिज्ञान के $१ \times १२ \times ४ = ४८$ भेद होते हैं। पिछले २८८ भेदों को जोड़ने पर

इन दोनों में क्या अन्तर है ?

विशुद्धप्रतिपातान्यां तद्विशेषः ॥२४॥

विशुद्धि (आत्मा के परिणामों को निर्मलता)
और अप्रतिपात (संयम में पतित न होने के कारण)
को अपेक्षा अनुमतों से विपुल्यमानों में विशेषता है ।

अथ पि और मनःपर्यय ज्ञान में क्या अन्तर है ?

**विशुद्धिर्वास्वामिविषयेन्योऽवधिमनः
पर्यययोः ॥२५॥**

अथ पि और मनःपर्यय ज्ञान में विशुद्धि, क्षेत्र,
स्वामी और विषय को अपेक्षा अन्तर है ।
(अवधिज्ञान से मनःपर्यय ज्ञान विशुद्ध है । लेकिन
अवधिज्ञान का क्षेत्र अधिक है । मनःपर्ययज्ञान के
स्वामी विशिष्ट संयम वाले मनुष्य ही होते हैं ।
अवधिज्ञान चारों ही गतिषों में होता है)

औपगमिक भाव के दो भेद—

सम्यक्त्वचारितो ॥३॥

औपशमिक सम्यक्त्व और औपगमिक चारित्र्य
ये दो औपगमिक भाव हैं ।

आधिक भाव के दो भेद हैं—

ज्ञानदर्शनदानलाभभोगोपभोगवीर्याणि
च ॥४॥

ज्ञान, दर्शन, दान, लाभ, भोग उपभोग, वीर्य
तथा सम्यक्त्व और चारित्र्य ये दो आधिक भाव
के भेद हैं ।

आयोपगमिक (मिश्र) भाव के अठारह भेद—

ज्ञानाज्ञानदर्शनलब्धयश्चतुस्त्रिपञ्च
भेदाः सम्यक्त्वचारित्रसंयमासंय-
माश्च ॥५॥

गति में गमन करता है ।
अर्थात् कामाक्षी योग में योग युक्त गति में प्रवेश
विप्रेरणा में कामाक्षी काम योग करता है

विप्रेरणात् कामयोगः ॥२५॥

किस गति में विना भक्त की प्रेरणा के गमन
करे होता है ? प्रश्न उत्तर है—

विप्रेरणा—अप्य गच्छेत् न भक्त रक्षित योग
अर्थात् फलप्राप्ति है । विप्रेरणा के बिना योग
गमन नहीं होता ।
भक्त प्रेरित योग प्राप्त करने वाला है ।

संज्ञातः समस्तकः ॥२६॥

प्रतिष्ठित योग के प्रकार—

अर्थात् के ४ योग प्रमाण अर्थात् के ४ योग प्रकार
अप्य से युक्त प्रमाण प्राप्त होता है ।

በዚህ ሕግ የተገለጸው ሕግ በዚህ ሕግ

በዚህ ሕግ የተገለጸው ሕግ በዚህ ሕግ

በዚህ ሕግ የተገለጸው ሕግ በዚህ ሕግ

በዚህ ሕግ የተገለጸው ሕግ በዚህ ሕግ
በዚህ ሕግ የተገለጸው ሕግ በዚህ ሕግ
በዚህ ሕግ የተገለጸው ሕግ በዚህ ሕግ
በዚህ ሕግ የተገለጸው ሕግ በዚህ ሕግ
በዚህ ሕግ የተገለጸው ሕግ በዚህ ሕግ
በዚህ ሕግ የተገለጸው ሕግ በዚህ ሕግ

በዚህ ሕግ የተገለጸው ሕግ በዚህ ሕግ
በዚህ ሕግ የተገለጸው ሕግ በዚህ ሕግ
በዚህ ሕግ የተገለጸው ሕግ በዚህ ሕግ

በዚህ ሕግ የተገለጸው ሕግ በዚህ ሕግ

በዚህ ሕግ የተገለጸው ሕግ በዚህ ሕግ

በዚህ ሕግ የተገለጸው ሕግ በዚህ ሕግ

በዚህ ሕግ የተገለጸው ሕግ በዚህ ሕግ

በዚህ ሕግ የተገለጸው ሕግ በዚህ ሕግ

በዚህ ሕግ የተገለጸው ሕግ በዚህ ሕግ

(इन सब जीवों के) शरीर औदारिक (स्पष्ट)

पानि शरीराणि ॥३६॥

औदारिकवैक्रियकाहिरकतैजसकाम

शरीर कितने प्रकार के होते हैं—

य जीवों का सम्मुखन जन्म होता है ।

गर्भ और उपपाद जन्म वालों से अतिरिक्त

शेषाणि सम्मुखनम् ॥३५॥

सम्मुखन जन्म किसके होता है—

जड़ता से जीवों की ओर मुँह करके पिरते हैं ।

उपपाद जन्म से उत्पन्न होते हैं । शरीरों उप-

देव और शरीरियों के उपपाद जन्म होता है ।

देवशरीरकाणामुपपादः ॥३४॥

पाद जन्म किसके होता है ?

गर्भ जन्म होता है ।

गर्भ में कोई आश्रय न रहता हो । इन जीवों

शरीर प्रयत्न हो चलने फिरने जग जावे और जिन

सर्वत्र ॥४२॥

वाले है ।

(मन्त्र की अंगुष्ठा) अर्थात् काल से सम्बन्ध रखने

तैजस और कामणि शरीर आत्मा के साथ

अर्थात् सर्वत्र ॥४१॥

तैजस और कामणि का आत्मा से सम्बन्ध—

पदां से स्वयं कहते हैं और न किसी की रीति है ।

पदां प्रविष्टास्तैः है अर्थात् न तो भौतिक

तैजस और कामणि से दोनों ही शरीर लोक

अप्रतिपत्ति ॥४०॥

तैजस और कामणि शरीर की विभक्त—

शरीर से तैजस शरीर में अन्तर्गुण प्रवेश होते हैं ।

अन्तर्गुण परमाणु वाले होते हैं अर्थात् आह्लासक

अन्त के दो शरीर अर्थात् तैजस और कामणि

अन्तर्गुण पर ॥३९॥

अथवा अन्त में अन्तर्गुण गुण प्रवेश है ।

ԳՐԱԼ ԵՒ ԵՆԻՔ ԵՒ ԵՄԵ ԵՒ ԵՄԵ ԵՒ ԵՄԵ
 ԵՄԵԼԵ ԵՄԵ ԵՄԵ ԵՄԵ ԵՄԵ ԵՄԵ
 ԵՄԵԼԵ ԵՄԵ ԵՄԵ ԵՄԵ ԵՄԵ ԵՄԵ
 ԵՄԵԼԵ ԵՄԵ ԵՄԵ ԵՄԵ ԵՄԵ ԵՄԵ
 ԵՄԵԼԵ ԵՄԵ ԵՄԵ ԵՄԵ ԵՄԵ ԵՄԵ

ԵՄԵԼԵ ԵՄԵ ԵՄԵ ԵՄԵ ԵՄԵ
 ԵՄԵԼԵ ԵՄԵ ԵՄԵ ԵՄԵ ԵՄԵ ԵՄԵ
 ԵՄԵԼԵ ԵՄԵ ԵՄԵ ԵՄԵ ԵՄԵ ԵՄԵ

ԵՄԵԼԵ ԵՄԵ ԵՄԵ ԵՄԵ ԵՄԵ ԵՄԵ
 ԵՄԵԼԵ ԵՄԵ ԵՄԵ ԵՄԵ ԵՄԵ ԵՄԵ
 ԵՄԵԼԵ ԵՄԵ ԵՄԵ ԵՄԵ ԵՄԵ ԵՄԵ

ԵՄԵԼԵ ԵՄԵ ԵՄԵ ԵՄԵ ԵՄԵ ԵՄԵ
 ԵՄԵԼԵ ԵՄԵ ԵՄԵ ԵՄԵ ԵՄԵ ԵՄԵ
 ԵՄԵԼԵ ԵՄԵ ԵՄԵ ԵՄԵ ԵՄԵ ԵՄԵ
 ԵՄԵԼԵ ԵՄԵ ԵՄԵ ԵՄԵ ԵՄԵ ԵՄԵ
 ԵՄԵԼԵ ԵՄԵ ԵՄԵ ԵՄԵ ԵՄԵ ԵՄԵ

ԵՄԵԼԵ ԵՄԵ ԵՄԵ ԵՄԵ ԵՄԵ ԵՄԵ

विनीतः अथवाः

हृदि यो उपायानि विरचये मां सदा

आर विरचितानि आदि वाच विरचितानि सदा विनीतः ।

का अथवा मया न हो सदा, धर्मपति

का अथवा मया हो सदा । यदि अथ विनीतः

विनीतः—एवम् विनीतः हो सदा हो अथ विनीतः

मया हो सदा ।

[उत्तर कृष्ण आदि न कर्म विनीतः हो] अथवा

विनीतः मया हो सदा, अथवा मया हो अथवा

विनीतः मया हो सदा (अथवा मया हो सदा)

उपाय कर्म विनीतः हो सदा (अथवा मया हो सदा)

गुणवत्त्ववत्त्वः ॥ ५३ ॥

अथवा विनीतः मया हो सदा

अथवा मया हो सदा —

विनीतः मया हो सदा

विनीतः मया हो सदा ॥ ५४ ॥

सीधुस-पुंशान, मानकृपार-माहेन्द्र, शिव-शिव
 पार, मानव-कालिपट, युक्त-महाशक्ति, मानार-महे
 रार, आनन-प्राणन, आरुण-अरुण इव मानहे

सिद्धि व ॥१९॥

वैजयन्त जयन्तपराजितेय सविधु
 रणारुणयोनवसु सुवैवर्क्य विजय
 शुक्रशतारसहस्रारुणाननप्राणनयोर
 शोभितरत्नःनवकालिपटशुक्रमहे
 सीधुसमानमानकृपार माहेन्द्रशिव

न विमानों के नाम क्या हैं ?

इन वैद्यों के विमान कसबों ऊपर ऊपर हैं ।

उत्पुष्टि ॥१८॥

विमानों की विपत्ति किस समय से है—

देव कल्पलोक परमेश्वर हैं ।

और यदि अगुन विमानों में उड़ान देते पावे
 यदि देव कल्पलोक और नव सुवर्णक, नव अजित
 नव से २ प्रकार के हैं । १६ स्थानों में उड़ान देते

[illegible]

የደብዳቤ ሂሳብ ለገንዘብ ማግኘት
በገንዘብ ማግኘት

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।
नमः शिवाय नमः शिवाय ।
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।
नमः शिवाय नमः शिवाय ।

[illegible]

